कटाई पश्चात् प्रबन्धनः

- ■ जड़ों को धोकर अच्छी तरह से छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए।
- सुखाई गयी सामग्री को जूट के थैलों अथवा लकड़ी के डिब्बों में रखा जाता है और शुष्क गोदामों भंडारित किया जाता है।

पैदावार

- प्रति हेक्टेयर 835 किलोग्राम सूखी जड़े प्राप्त होती हैं।

जटामांसी की खेती

सामान्य नाम	:	जटामांसी
वानस्पतिक नाम	:	नारडोस्टीकस् ग्रडिफ्लोरा
कुल	:	वलेरिनिऐसी
उपयोगी भाग	:	जड़ और प्रकन्द
सामान्य उपयोग	:	जटामांसी रोगाणुरोधक, भूखवर्द्धक, शामक, प्रतिजैविकी, प्रतितरंगी पौधा है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास हाई एलटीट्यूड प्लांट फिजियोलॉजी रिसर्च सेंटर, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखण्ड के द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

जटामांसी

नारडोस्टीकस् ग्रडिफ्लोरा

कुलः वलेरिनिऐसी

- जटामांसी सीधा, बालों वाला, बारहमासी, 10–60 सेमी. की लम्बाई वाला पौधा होता है।
- प्रकन्द मोटे, लम्बे तथा पत्तियों के अवशेष के साथ ढके हुए होते हैं।
- पत्तियाँ मूलभूत होने के साथ स्तंभीय भी होती हैं।

जलवायु और मिट्टी

- यह पौधा सामान्यतः 25–45° ताप वाली पहाड़ों की खड़ी ढलान वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।
- दोमट तथा छिद्रिल मिट्टी इसके लिए अधिक उपयुक्त होती है।

उगाने की सामग्रीः

- बीज

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करना

- मई माह में नर्सरी में बीजों से फसल को तैयार किया जा सकता है।

पौध दर तथा पूर्व उपचार

- लगभग 600 ग्राम बीजों को एक हेक्टयर जमीन में बोया जा सकता है।
- बीजों और प्रकन्दों को जीए$_3$ (जिबरलिकएसिड) के साथ 100पीपीएम और 200 पीपीएम में 48 घंटों तक पूर्व उपचार किया जाता है जिससे तेजी से अंकुरण में सहायता मिलती है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- गर्मी के मौसम के दौरान भूमि को खोदकर या हल चलाकर पहले समतल किया जाता है और क्यारियों को दाईं तरफ खुला छोड़ते हुए सप्ताह में एक बार सौरीकरण किया जाता है।
- केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट)/एफवाईएम को बीज बोने से पूर्व क्यारियों में डाला जाता है तथा प्रकन्दों को प्रत्यारोपित किया जाता है।
- पौधे के विकास के लिए लगभग 40 कुन्तल एफवाईएम वन की घास फूस की खाद प्रति हेक्टयर अधिक उपयुक्त होती है।

पौधा रोपण और अनुकुलतम दूरीः

- 20 सेमी. X 20 सेमी. या 20 सेमी. X 30 सेमी. की दूरी रखते हुए बीजों को अंकुरण के 50–60 दिनों के बाद प्रत्यारोपित करना चाहिए।
- प्रत्यारोपण कार्य को प्रारम्भ करने से 15 दिन पहले खाद को मिट्टी में मिलाना चाहिए।
- उसके बाद निराई तथा भूमि समतल की जाती है।
- 0.2–0.25 मिलियन पौध एक हेक्टयर भूमि के लिए आवश्यक होती है।

अंतर फसल प्रणालीः

- इसे एकल फसल के रूप में उगाया जाता है।

संवर्धन विधि और रख–रखाव पद्धतियाँः

- प्रति हेक्टयर में 6.0–8.0 टन तक खाद डालनी चाहिए।
- प्रथम वर्ष में 50 प्रतिशत खाद का प्रयोग किया जाता है और बची हुई खाद को दो हिस्सों में दूसरे और तीसरे वर्ष के दौरान प्रयोग में लाया जाता है।

सिंचाईः

- प्रारम्भ में निचले भागों में (2000 मीटर समुद्र तल से) वैकल्पिक दिनों में सिंचाई करनी चाहिए।
- शुष्क मौसम में सप्ताह के अंतराल में सिंचाई की जानी चाहिए।
- मिट्टी में लगातार नमी बनाये रखना चाहिए।

फसल प्रबंधनः

फसल पकना और कटाईः

- बीजों के द्वारा फसल उगाने से फसल के पकने में तीन से चार वर्ष लग जाते हैं।
- प्रकन्दों के माध्यम से फसल उगाने में दो से तीन वर्ष का समय लगता है।
- पौधों का अक्टूबर में पकने के बाद संग्रहण करना चाहिए।